Volume: 1 Issue: 3 Pages: 32-34
International Journal of Research in Academic World
E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133
Received: 22/September/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(3):32-34 Accepted: 28/October/2021

रैगर जाति की सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति, भाषा तथा शैक्षिक स्तर

[*1]Kavita

[*1]Assistant Professor, Department of Sociology, IGNOU, New Delhi, India.

सारांश

रैगर जाति मूलतः राजस्थान के दलित हैं। यह समुदाय सामाजिक–आर्थिक, शोषण व उत्पीड़न का शिकार रहा है। इसे दूसरे दलित जातियों की तरह ही सवर्ण जाति वेफ लोग समाज वेफ निचले क्रम में रखते थे। रैगर जाति दूसरी दलित जातियों की तरह शोषण का शिकार रही है। अगर यह कहा जाए की वह दूसरी दलित जातियों से यादा शोषण का शिकार रही है तो इस बात में कोई अतिशयोक्ति न होगी। रैगर समाज को बेहतर समझने के लिए इस समुदाय के नृजातीय; म्जीदपबद्ध इतिहास के बारे में जानना जरूरी है। रैगर शब्द का अर्थ है, 'रंगरेा'; रंगने वालाद्ध! रैगर चमड़े की रंगाई करते हैं। उन्हें चमार समूह; क्लस्टरद्ध के अन्तर्गत अनुसूचित जाति में शामिल किया गया है। अब इस समुदाय ने अपनी स्थिति में सुधर लाने के लिए संघर्ष शुरू कर दिया है तथा वे सामाजिक आर्थिक समता प्राप्त करने की कोशिश में लगे हुए हैं। अब कुछ सदस्य अन्य कार्यों में भी लग गए हैं, जैसे कि जिल्द सा ी, अध्यापन, द ी का काम, अन्य नौकरियां तथा कपड़े एवं कृत्रिम आभूषणों की खरीद–पफरोख्त। शिक्षित सदस्य नौकरशाही में कार्यरत हैं। रैगर जाति की सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति को प्रस्तुत करते हुए शिक्षा के स्तर की जानकारी को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

मूल शब्दः रैगर जाति, सामाजिक, आर्थिक, प्रस्थिति, भाषा, शिक्षा

प्रस्तावना

सामाजिक प्रस्थिति

दिल्ली में बसे रैगर जाति वेफ अध्कितर लोग अपने आप को दलित समुदाय का नहीं मानते। मगर उनकी हालत करोल बाग वेफ दूसरे दलितों से बेहतर भी नहीं है। ये लोग अनुसूचित जाति प्रमाण–पत्रा वेफ होने को स्वीकारते हैं। सभी सरकारी सुविधएँ जैसे– स्वूफल में बच्चे का दाखिला, सरकारी नौकरियाँ आदि प्राप्त करते हैं। मगर अपने आप को दलित समुदाय का बताने से कतराते हैं। इनकी सामाजिक स्थिति सुध्र रही है मगर दिल्ली में भी कई घटनाएँ देखने को मिलती है, जिसका वर्णन आगे करेंगे। ये लोग धार्मिक विश्वासों को बहुत मान्यता देते हैं तथा हिन्दू धर्म पूर्ण अपनाते दिखाई देते हैं, जबकि बात करने पर बताते हैं कि हम सभी धर्मो के उत्सवों और त्योहारों को महत्व देते हैं। वास्तव में, मुझे ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा।

रैगर जाति से तथ्यों को इक्ट्ठा करने के दौरान कई लोगों, बल्कि अधिकतर लोगों ने कहा कि सभी जातियाँ समान हैं. . .। इसमें भी मतभेद लगा, क्योंकि रैगर जाति के लोगों से जातिगत सवाल किये जाने पर उन्होंने अपनी जाति को ही श्रेष्ठ बताया तथा कहीं–न–कहीं अन्य दलित जातियों को स्वयं से निम्न बताया। चमार जाति को तो इन्होंने सिरे से ही अपनी जाति से अलग व हेय दृष्टि से देखा। अपनी जाति के उत्थान के लिए रैगर जाति के लोग सदैव अग्रसर रहे हैं एवं इनमें जाति एकता देखने को मिलती है।

इसमें कई लोगों ने अपने ऐतिहासिक काल में ठाकुरों व अन्य उँफची जातियों द्वारा किए गए जुल्मों के विषय में जानकारी दी कि अंग्रेजों का राज तो था ही लेकिन राजपूत; ठाकुरद्ध अपने आप को उँफचा मानते थे। ये ग़रीब रैगर जाति के लोगों से लगान लेते थे व उन्हें चारपाई पर नहीं बैठने देते थे, हुक्का नहीं पीने देते थे, क्योंकि रैगर चमड़ा रंगते थे। चमड़े की रंगाई का काम करने से हाथों आदि पर काला पीला रंग लग जाता था तथा चमड़े को छूने से उसकी गंध आती थी, इसलिए इनके साथ छुआछूत का व्यवहार किया जाता था। महिलाओं के साथ अत्यंत दुर्व्यवहर किया जाता था। गोरी चिट्टी खूबसूरत महिला के साथ ज़ोर–ज़बरदस्ती करते थे। बनिये मनमानी से पैसे लेते व उधर लेने पर अपनी मर्जी से पैसे लिख कर उस पर अंगूठा लगवा कर अपनी मर्जी का ब्याज़ लेते, क्योंकि रैगर जाति के लोग निरक्षर थे।

रैगर जाति की आर्थिक प्रस्थिति

रैगर जाति की स्थिति आर्थिक रूप से भी अत्यंत पिछड़ी हुई है। वैसे तो इस जाति के आर्थिक रूप से कम ोर होने के अनेक कारण हैं, परन्तु मुख्य कारण कुरीतियां व अशिक्षा है। रैगर जाति का मुख्य व्यवसाय चमड़ा रंगना रहा है परन्तु यह परम्परागत तरीके से ही किया जाता था इसमें किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता था जिससे श्रम तो अध्कि लगता परन्तु आमदनी कम ही रहती, जिससे परिवार का गु ारा मुश्किल से हो पाता था।

चमड़ा रंगने का व्यवसाय पीढ़ियों से चला आ रहा है। परन्तु इसमें अध्कि ध्न नहीं मिल पाता जिसके कारण एक परिवार का पर्याप्त भरण–पोषण नहीं हो पाता। रैगर जाति के लोग जूते–चप्पल बनाने का कार्य करते, परन्तु इसका भी इन्हें पर्याप्त पैसा नहीं मिल पाता था जिसकी वजह से इनकी हालत जस की तस बनी रही।

रैगर जाति के लोग खेती का कार्य भी करने लगे थे। इनके पास अध्कि ामीन तो नहीं होती थी परन्तु जो भी होती उसी पर खेती करके ये लोग अपना गु ारा करने का प्रयास करते थे। परन्तु ये लोग खेतीहर नहीं थे व्यवसाय तो इनका चमड़े से सम्बन्धित ही था।

रैगर औरतें भी गु ारे के लिए छोटे–मोटे काम घर में ही करतीं। जैसे बीड़ी बनाना, हाथ पंखे बनाना, टोकरी बनाना आदि। शिक्षा के

***Corresponding Author:** Kavita

अभाव के कारण इनको सरकारी नौकरी या कोई लेखा–जोखा रखने का काम भी नहीं मिल सकता था। रैगर जाति की स्थिति के अध्कि ख़राब होने के कारणों में कुरीतियां भी शामिल हैं। इसमें बहुत सी बुराइयां भी हैं जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं जैसे सट्टे बा ाी की आदत, नशाखोरी, गांजा, शराब पीना, सिगरेट आदि की बुरी लत है इन्हीं आदतों के कारण इनका आर्थिक रूप से और अध्कि गिराव होता जा रहा था। गांजा व शराब का सेवन महिलाएं भी करती थीं। रैगर जाति के लोगों के कई–कई बच्चे होते थे जो कि भगवान की देन समझे जाते थे कमाने वाला व्यक्ति एक और खाने वाले अनेक जिससे इनकी स्थिति बिगड़ती रही। परिवार नियोजन जैसी बातों या प्रक्रियाओं में इनकी रूचि नहीं थी। ये सभी कुरीतियां व जानकारी का अभाव अशिक्षा के कारण ही था। शिक्षा का अभाव भी इनके आर्थिक पिछड़े पन का कारण रहा। सरकारी तौर पर इन्हें किसी प्रकार की सुविध दी भी जाती तो इन्हें इसकी जानकारी नहीं होती जिसकी वजह से ये सरकारी सुविधओं से वंचित रहते थे।

एक महत्वपूर्ण जानकारी कि इस जाति; रैगर जातिद्ध की महिलाएँ घर में लघु उद्योग करती हैं, जो कि खुले तौर पर मैं देखती आयी हूँ। जबकि मेरे साक्षात्कार में लघु उद्योग के बारे में पूछे जाने पर महिलाओं व पुरुषों ने सामने से इनकार कर दिया और कहा कि हम तो कोई काम नहीं करते।

इसी प्रकार से सभी महिलाओं ने लघु उद्योग किये जाने की बात को सिरे से नकारा। अपने शोध के अन्तर्गत रैगर जाति की अधिक से अधिक स्रोतों द्वारा जानकारियाँ प्राप्त करके मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि रैगर जाति के लोग अपनी जाति के प्रति जागरुक तो हैं, परन्तु आधुनिक जीवन के तरीके के लिए यदि आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए वह कोई छोटा–मोटा कार्य करते हैं तो उसे अपनी अस्मिता से जोड़ते हैं। जैसे कि यदि किसी को पता चलेगा तो हमारी बदनामी होगी और लोग हमें छोटा समझेंगे।

दूसरा कारण यह भी है कि ये लोग अपनी कमाई के विषय में किसी को बताना नहीं चाहते। इन्हें यह भी डर रहता है कि अधिक कमाई के विषय में पता चलने पर सरकार को टैक्स न देना पड़ जाये।

अशिक्षित होने के कारण ये जाति भी सामंती व्यवस्था की शिकार रही तथा बेगार करने के लिए बाध्य रही। आर्थिक कम ाोरी के कारण इन लोगों में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी रहीं। शरीर में किसी भी प्रकार की बीमारी हो जाने पर उसकी जानकारी न होने के कारण इलाज न होने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती। अध्कि से अध्कि ये होता कि, अंधविश्वास से ग्रसित लोग थोड़ा झाड़–पूंफक करवा लेते या कोई भभूत; राखद्ध आदि किसी जन्तर–मन्तर वाले बाबा से लेकर मरी ा के लगा दिया जाता था तथा मरी ा को खिला दिया जाता। इस प्रकार के अन्धविश्वासों का होना भी अशिक्षा के कारण ही था जो बहुत ही हानिकारक रूप भी ले लेता था, या तो व्यक्ति की मृत्यु हो जाती या वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता।

रैगर समाज के अन्तर्गत आर्थिक स्थिति कम ाोर तो थी ही साथ ही उनकी शिक्षा का स्तर भी निम्न होने से उनका उत्थान होना इतना सरल नहीं था क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही आगे बढ़ा जा सकता था व जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती थीं। यही जानकारियों का होना ही उनकी उन्नति में अध्कि सहायक होता। ऐसा भी नहीं था कि रैगर जाति के लोग जानबूझ कर अशिक्षित थे या अपनी उन्नति नहीं करना चाहते थे। वास्तव में रैगर जाति जो कि चमड़े से सम्बन्धित कार्य करती थी इसी कारण इसे निचले द र्ा का माना जाता था, इसलिए राजस्थान की उफंची जातियाँ राजपूत व ठाकुर, ब्राह्मण आदि इन्हें इस योग्य ही नहीं समझते थे कि ये लोग शिक्षा ग्रहण करें या अपनी जाति के बारे में या अपने बारे में कोई उन्नति हो ऐसा काम करें। यदि रैगर जाति की उन्नति होती है, तो उफंची जातियों को अपना वर्चस्व ख़तरे में दिखाई देता जिसके भय से ही उच्च जाति के लोग रैगर जाति के लोगों को सदैव दबाती रहे व इनका शोषण करती रही।

रैगर जाति की भाषा

दिल्ली में रैगर जाति की भाषा की बात करें तो हम पाते हैं कि इनकी अपनी भाषा है जो कि राजस्थानी भाषा डिंगल रूप में बोली जाती है। डिंगल शैली वैसे तो मारवाड़ी आधर की है। लेकिन इसे पूरे राजस्थान में अपनाया गया और आपस में इस समुदाय के लोग राजस्थानी भाषा में बात चीत करना पसंद करते हैं इस भाषा के कुछ शब्द इस प्रकार हैं– जैसे पानी–पाणी, लड़का–छोरा, जेवड़ी–रस्सी, यहाँ–अण्डी का अंडै, वहाँ–वण्डैं, वण्डिका, अभी–अबार, उसे–उफना, ये–या, चलो–चालो, ऐसे–अईयाँ, लड़की–छोरी, माँ–माई, सिर–माथो, तुम; आपद्ध– थे, मुझे–मूना आदि। हालाँकि दिल्ली में या दूसरे शहर जहाँ–जहाँ रैगर जाति की आबादी है वहां ये लोग हिन्दी ही बोलते हैं परन्तु जब ये स्वयं के समुदाय के लोगों से बात करते हैं तो अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। राजस्थानी भाषा में कई साहित्य व ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थानी भाषा का राजस्थानी सबदकोस भी बनाया गया है जिसमें 2 लाख 10 हजार शब्दों को लिखा गया है ये सीताराम लालस ने लिखा है।

रैगर जाति का शैक्षिक स्तर

रैगर समाज या रैगर जाति के विषय में अध्कि जानकारी प्राप्त करने के लिए केवल द्वितीय स्रोत ही नहीं अपितु मैंने इसके लिए प्रथम स्रोत को भी अति आवश्यक समझा। जिसके अन्तर्गत मैंने रैगर जाति; दलित समाजद्ध का अध्ययन करने के लिए दिल्ली के करोल बाग क्षेत्रा को चुना इसमें मैंने करोल बाग के अन्तर्गत रैगर पुरा, बीडन पुरा, देव नगर, बापान गर, टैंक रोड़ में रहने वाले रैगर जाति के लोगों के साक्षात्कार लिया साक्षात्कार के लिए मैने एक प्रश्नावली तैयार की इस प्रश्नावली द्वारा इस जाति की ऐतिहासिक व राजनैतिक स्थिति सामाजिक व आर्थिक स्थिति को जानने में मदद करे। इसमें मैंने 18–50 आयु वर्ग और 50–90 आयु वर्ग को शामिल किया। जो कि पुरूषों व महिलाओं के विषय में है इसमें 100 लोगों का साक्षात्कार किया।

शिक्षा वेफ स्तर की विस्तार पूर्वक जानकारी

तालिका 1: रैगर जाति वेफ लोगों का शिक्षा स्तर प्रतिशत; ÷द्ध में

आयु	पुरूष कक्षा 1 से 12; ÷द्ध	महिला कक्षा 1 से 12; ÷द्ध	पुरूष स्नातक; ÷द्ध	महिला स्नातक; ÷द्ध	पुरूष स्नातकोतर; ÷द्ध	महिला स्नातकोत्तर; ÷द्ध	अन्य; ÷द्ध
6–18	50; 50÷द्ध	50; 50÷द्ध	–	–	–	–	–
18–50	30; 30÷द्ध	32; 32÷द्ध	8; 8÷द्ध	12; 12÷द्ध	8; 8÷द्ध	4; 4÷द्ध	6; 6÷द्ध
50–90	10; 10÷द्ध	5; 5÷द्ध	4; 4÷द्ध	1; 1÷द्ध	–	–	–

साक्षात्कार वेफ अंतर्गत प्राप्त जानकारी द्वारा ज्ञात होता है कि आयु वर्ग 6–18 वेफ पुरुषों की संख्या में से 50÷ पुरुष 1 से 12 कक्षा तक शिक्षित है और 50÷ महिलाएँ भी 1 से 12 कक्षा तक शिक्षित है। 18–50 वर्ग की आयु वर्ग वेफ 30÷ पुरुष व 32÷ महिलाएँ 1 से 12 कक्षा तक शिक्षित है। 50 से 90 वर्ग की आयु वेफ पुरुषों में 10÷ पुरुष तथा महिलाओं में 5÷ महिलाएँ 1 से 12 तक शिक्षित है। 18–50 आयु वर्ग वेफ पुरुषों में 8÷ पुरुष स्नातक तक शिक्षित है व महिलाओं में 12÷ महिलाएँ स्नातक तक शिक्षित है तथा 50–90 आयु वर्ग वेफ पुरुषों में 4÷ पुरुष ही शिक्षित है व 1÷ महिलाएँ स्नातक है। 18–50 आयु वर्ग वेफ पुरुषों में 8÷ पुरुष स्नातकोत्तर है व 4÷ महिलाएँ स्नातकोत्तर है। इसवेफ अलावा अन्य प्रकार वेफ छोटे–मोटे डिप्लोमे या कोई कोर्स; मैवेफनिकी, सिलाई–कढ़ाई, रंग–रोगन आदिद्ध किए हुए पुरुष व महिलाएँ सब मिलाकर लगभग 6÷ है।

रैगर जाति के लोगों में शिक्षा का स्तर अभी भी बहुत कम है परन्तु यह लोग अक्षर ज्ञान होने पर भी स्वयं को पढ़ा लिखा मानते हैं। इनमें 18–50 आयु वर्ग वाले लोगों में अधिकतर 8वीं, 9वीं या दसवीं पफेल हैं, कुछ लोग 5वीं या 6वीं, 7वीं कक्षा तक पढ़े है।

रैगर जाति के जो लोग आर्थिक रूप से बहुत संपन्न हैं या जिनके पूर्वज दिल्ली में बहुत अधिक सम्पति बना पाए वह लोग बहुत बड़े व्यापारी या उफंचे दर्जे की नौकरियाँ करते हैं। जैसे रैगर जाति का एक रातावाल परिवार इतना सम्पन्न रहा है कि इस परिवार के बच्चे अंग्रेजी माध्यम के महंगे स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते रहे हैं। साक्षात्कार के अंतर्गत रैगर जाति वेफ आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक रूप से बहुत सम्पन्न इसी परिवार का एक लड़का जो कि इण्डियन एअर लाईंस में पाइलेट है, ने बताया कि फजब वह स्कूल में पढ़ने जाता था तो दूसरे बच्चे जो सवर्ण परिवारों से थे वो बच्चे आपस में कहा करते थे कि ये ैण्ड, रैगरद्ध है, और उससे यादा बात नहीं करनी चाहिए। जबकि मेरे चाचा जो कि विधयक थे वह कई बार स्वूफल में मुख्य अतिथि वेफ रूप में बुलाए जा चुवेफ थे।य

''ऐसी बात नहीं है कि निचले पायदानों पर स्थित तबके सब कुछ चुपचाप स्वीकार करते आए हों। उफंची जातियों ने उनकी जो छवियां निर्मित की उनके इतर वे अपनी अस्मिताएं रचते रहे हैं। उन्होंने उलग सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के ज़रिये ऐसे जगत का निर्माण किया जहां आत्मसम्मान, गरिमा और एक हद तक सत्ता मौजूद है। [1]

इस प्रकार रैगर जाति के अन्तर्गत शिक्षा परिवर्तन तो आते रहे हैं परन्तु इसकी गति धीमी रही है। वर्तमान में तो पिछले दशक में बने माता पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रहे हैं, इसके लिए वह अपने बच्चों को अच्छे अंग्रेजी माध्यम वाले सरकारी तथा गैर सरकारी; प्राइवेटद्ध स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। तथा उनकी शिक्षा में किसी प्रकार की समस्या न हो इस बात का भी वह विशेष रूप से ख़्याल रखते हैं। वह बच्चों को स्कूल के अलावा प्राइवेट ट्यूशन में भी पढ़ने के लिए भेजते हैं और रैगर जाति वेफ लोग अपनी शिक्षा के स्तर को उफंचा करने का प्रयास कर रहे है।

सन्दर्भ

1. उफमा चक्रवर्ती, जाति समाज में पितृसत्ता, प्रथम संस्करण हिन्दी 2011, ग्रंथ शिल्पी पृ. 18
2. चक्रवर्ती, उफमा; 2011द्ध, जाति समाज में पितृसत्ता, ग्रंथ शिल्पी.
3. एम.एन. श्रीनिवास; 1957द्ध, आधुनिक भारत में जाति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. एम.एन. श्रीनिवास; 1967द्ध, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. लिंच ओवेन, एम.; 1974द्ध, जैम च्वसपजपबे वि न्द. जवनबींइपसपजल ैवबपंस डवइपसपजल ंदक ैवबपंस बिंदहम पद ब्पजल वि प्दकपंए दिल्लीः नैशनल पब्लिशिंग हाउफस, दिल्ली.
6. गौतम, एस.एस.; 2013द्ध, वुफमार अजय, जाति आखिर क्यों नहीं जाती?, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली.
7. अली अनवर; 2001द्ध, मसावात की जंग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
8. घुरिये, जी.एस.; 1932द्ध, ब्ेंजम ंदक त्ंबम पद प्दकपंए त्नजसमकहम.
9. बेते, आन्द्रे; 1965द्ध, ब्ेंजमए ब्सें ंदक च्वूतए ठमतामसमल ंदक स्वे ।दहमसमे रू यूनिवर्सिटी ऑपफ वैफलिपफोर्निया प्रेस.
10. बोकोलिया, चिरंजीलाल; 1964द्ध, सी.एल., रैगर कौन और क्या, दिल्ली.
11. देरिदा, आर.एस.; 1976द्ध, ब्पअपस स्पइमतजपमे ंदक च्वसपजपबंस डवअमउमदजे पद त्रेंजींद पद श्रवनतदंस वि जीमत्रेंजींदए प्देजपजनजम वि भ्पेजवतपबंस त्मेमंतबीए टवसण्. ग्प्प्ए छवण् 2.
12. शाह जी. एस.; 1975द्ध, ब्ेंजम ेवबपंजपवद ंदक च्वसपजपबंस च्तवबमे पद ळनरंतंजए बम्बई, पॉपुलर, प्रकाशन.
13. शाह, घनश्याम; 1991द्ध, ैवबपंस इंबांूतकदमे ंदक च्वसपजपबे वि त्मेमतअंजपवदए ।ददनंस छनउइमतए डंतबी,
14. नवल, चंदनमल; 2011द्ध, रैगर जाति– इतिहास एवं संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर; राजस्थानद्ध.
15. पाण्डेय, मनोज वुफमार; 2009द्ध, समाज शास्त्रा और आप, दक्ष पब्लिवेफशन, दिल्ली.
16. गोपाल सिंह, डॉ. राम; 1994द्ध, सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकामदी, जयपुर.
17. कर्दम, जयप्रकाश; वार्षिक 2005द्ध, दलित साहित्य, शब्दक संयोजन, शाहदरा, दिल्ली–32.
18. अम्बेडकर, बी.आर.(1936)] Allihination of Caste, Govt. of Maharashtra, Bombay.
19. मिशेल, एस.एम.(Ed.)(1999)] Dalits in Modern India : Vision and Values, foLrkj ifCyosQ'kUl] ubZ fnYyh